जुमा के दिन की फजीलत और एहतेमाम

मुफती अहमद खानपुरी दब

अल्लाह ने उम्मते मुहम्मदीय्या को जिन मख्सूस नेमतों और फज़ाइल से मालामाल किया हे उन्मे से एक जुमा का दिन भी हे हफता मे एक दिन हे जो तमाम दिनों का सरदार हे और बडी फज़ीलत वाला दिन हे दिन के इन्तेखाब के मुताल्लिक अगली उम्मतों को इख्तीयार दिया गया था चुनान्चे यहूद ने बजाये जुमा के एक दिन लेट यानी सनीचर को पसन्द किया गोया उन से चूक हो गयी और नसारा (इसाइ) ने एक दिन और लेट किया यानी इतवार को पसन्द किया अल्लाह ने उम्मते मुहम्मदीय्या को असल फज़ीलत वाला दिन यानी जुमा अता फरमाया इसी लिये रिवायतों मे आता हे हुज़ूर صلى الله عليه وسلم ने इरशाद फरमाया यहूद तुम पर उस वजह से हसद करते हे के तुम को अल्लाह की तरफ से जुमा का दिन दिया गया हे दरअसल अल्लाह के यहां जो पहले से मुन्तखब और पसन्दीदा दिन था वही उम्मते मुहम्मदीय्या को मिला.

कुर्आन की आयत पेश की (सू.जुमा-1) जब जुमा की नमाज मुकम्मल हो जाये तो ज़मीन मे फेल जावो और अल्लाह

का फ़ज़ल तलाश करो यानी रोज़ी के लिये कोशिश करो और अल्लाह को खूब याद करो ताके तुम कामयाब हो जावो इस से मालूम हूवा के जुमा की नमाज़ के बाद ज्यादा से ज्यादा अल्लाह के ज़िकर का एहतेमाम करना चाहिये.

सब से बेहतरीन दिन

हज़रत अबू हुरैरह(रदी) फरमाते हे के हुज़ूर صلى الله عليه وسلم ने इरशाद फरमाया जिन दिनों मे सूरज तुलूअ होता हे उन मे सब से बेहतरीन दिन जुमा का हे उसी दिन मे हज़रत आदम(अल) पैदा किये गये थे उसी दिन अल्लाह ने उन को जन्नत मे दाखिल किया और उसी दिन जन्नत से निकाले भी गये. (मुत्तफकुन अलयहि/११४९)

इफादात- हफ्ते के दिनो मे अफज़ल तरीन दिन जुमा का हे और साल के दिनों मे अफज़ल दिन अरफा यानी नव्वी (९) जिल्हज्जा का हे और अगर अरफा का दिन जुमा को हो जाये तो फिर नूरून अला नूर दौनो फज़ीलतें जमा हो जायेगी.

सारी मख्लूकात ज़मीन और आस्मान वगैरा और दिनों मे पैदा हूयी लेकिन सारी काइनात का खुलासा और पैदाइश का मकसूद यानी हज़रत इन्सान के जद्दे अमजद हज़रत

आदम(अल) को अल्लाह ने जुमा के दिन पैदा किया और जुमा ही के दिन मे अल्लाह ने हज़रत आदम(अल) को जन्नत मे दाखिल किया और जुमा ही के दिन जन्नत से निकाले भी गये.

अब ये सवाल पैदा हो सकता हे के जुमा के दिन पैदा किया जाना और जुमा के दिन जन्नत मे दाखिल होना तो एक फज़ीलत की बात थी लेकिन जन्नत से निकाले जाने मे कौन्सी फज़ीलत थी जिस को यहां ज़िकर किया हे? तो उलमा ने लिखा हे के जन्नत से निकाले जाने मे कौन्सी फज़ीलत थी जिस्को यहां ज़िकर किया हे? तो उलमा ने लिखा हे के जन्नत से निकाल कर दुन्या मे लाये गये तब ही तो अमबिया और अवलीया वुजूद मे आये उन्का जन्नत से निकाल कर दुन्या मे भेजा जाना अल्लाह के मकबूल बन्दो अमबिया और अवलीया वगैरा के वुजूद मे आने का ज़रीया बना इसलिये ये खैर ही खैर की चीज़ थी.

जुमा के एहतेमाम पर दस दिनो के गुनाह माफ

अबू हुरैरह(रदी) से रिवायत हे के हुज़ूर ﷺ ने इरशाद फरमाया जिस ने वुज़ू किया और अच्छा वुज़ू किया यानी वुज़ू के तमाम आदाब और सुन्नतों की रियाअत करते हुवे

वुज़ू किया फिर जुमा की नमाज़ के लिये मस्जीद मे आया और खुतबा की तरफ कान लगाये और खामोश रहा खुतबा के दरमीयान बात चीत या बेकार चीज़ों मे मश्गूल नही रहा तो इस जुमा से लेकर दूसरे जुमा तक और मज़ीद तीन दीन यानी कुल दस दिन के उस्के गुनाह माफ कर दिये जायेन्गे और जिस ने कंकरीयों को छुवा उस ने लग्व और बेकार काम किया. (मुत्तफकुन अलयहि/११५०)

इफादात- खुतबा के दौरान किसी किसम के खेल मे मश्गूल न रेहने का मतलब ये हे के उस ज़माने मे मस्जीद मे पुख्ता फर्श और कालीन वगैरा बिछे हुवे नही होते थे बल्के आम तौर पर रेत और कंकरीयां होती थी जो लौग गफलत वाले होते थे वो कंकरीयों मे मश्गूल रेहते थे जैसे आज कल लौग कपडे और उन्गली घडी मोबाइल वगैरा मे मश्गूल होते हे और उन से खेलते रेहते हे इन सारी चीज़ों से तवज्जुह हटा कर पूरे तौर पर खुतबा सुन ने की तरफ तवज्जुह देन्गे तब तो ये फज़ीलत हासिल होगी और अगर इधर उधर मश्गूल रहा तो फिर फज़ीलत हासिल नही होगी.

जुमा छोडने से बाज़ आ जाये वरना

हज़रत अबू हुरैरह(रदी) और हज़रत अब्दुल्लाह बिन

उमर(रदी) से रिवायत हे के उन दौनो ने हुज़ूर صلى الله عليه وسلم को इरशाद फरमाते हुवे सुना जब के आप मिम्बर पर खुतबा दे रहे थे लौग जुमा की नमाज़ों को छोडने से बाज़ आ जाये वरना अल्लाह उन्के दिलों पर महर लगा देन्गे फिर वो हमेशा के लिये गाफिल बन जायेन्गे. (मुत्तफकुन अलयहि/११५२)

इफादात- मालूम हूवा के ऐसे भी लौग होते हे के जुमा की नमाज़ भी नही पढते और जुमा की नमाज़ छोडने पर इतनी सख्त वइद हे के आदमी के लिये दिल पर महर लगने का सबब बनता हे उस्के बाद आदमी से नेकी की तौफीक छीन जाती हे.

जुमा के गुसल का वकत

अब गुसल कब करना चाहिये? वेसे सुब्हे सादिक के बाद कभी भी कर सकते हे अगर उससे पहले कोयी आदमी गुसल कर लेगा तो सुन्नत अदा नही होगी और जिस गुसल मे वुज़ू किया गया हे उसी वुज़ू से जुमा की नमाज़ अदा करे तो ज्यादा मुनासिब हे अगर किसी को इत्मीनान हो के सुब्ह जल्दी गुसल कर लूंगा और उसका वुज़ू जुमा की नमाज़ तक बाकी रहे तो बहुत अच्छा हे उसके बावजूद अगर दरमीयान मे वुज़ू टूट गया तो फिर से वुज़ू कर ले और जुमा

की सुन्नत की तरफ से वही गुसल काफी हे और अगर उसी वुज़ू से जुमा की नमाज़ अदा करने की गर्ज़ से ताखीर की और ९ या १० बजे गुसल किया तब भी कोयी हर्ज़ की बात नही बल्के यही ज्यादा मुनासिब हे.

जुमा की सुन्नतें और आदाब

हज़रत सलमान फारसी(रदी) फरमाते हे के हुज़ूर صلى الله عليه وسلم ने इरशाद फरमाया जो आदमी जुमा के दिन गुसल करता हे और अपनी ताकत के मुताबिक पाकी हासिल करता हे बालों मे तेल लगाता हे घर मे खूश्बू हो तो इस्तेमाल करता हे और साफ सुथरे कपडे पहनता हे फिर मस्जीद मे जाता हे और दो आदमीयों के दरमीयान जुदाइ नही करता यानी किसी को फलांग कर आगे नही जाता फिर अल्लाह ने जो मुकद्दर फरमाया उतनी नमाज़ पढता हे और जब इमाम खुतबा देता हे तो खामोश बेठता हे तो उस के इस जुमा से लेकर दूसरे जुमा तक के तमाम गुनाह माफ कर दिये जाते हे. (मुत्तफकुन अलयहि/११५६)

इफादात- जुमा के दिन लौगों की गरदनो को फलांग कर आगे जाने पर बडी सख्त वइद आयी हे कोयी आदमी अगर ऐसा करेगा तो कयामत के दिन उस्को पुल बनाया जायेगा.

लेकिन अगर अगली सफों मे जगहे खाली हे और पीछे की सफों मे बेठने वालों ने वो जगहे पुर नही की हे तो फिर उस सूरत मे फुकहा ने लिखा हे के आगे की सफ को पुर करने के लिये सिवाय उस्के और कोयी इलाज़ ही नही हे इसलिये अगर कोयी आदमी लौगों को फलांग कर आगे जाये तो उस्की इजाज़त हे इसलिये के उन्हों ने खूद ही पीछे बेठकर अपनी हुरमत को खतम किया हे.

देखो इस रिवायत मे जुमा की सुन्नतो और आदाब मे से कइ चीज़ें बतलायी गयी हे एक तो जुमा का गुसल कर ले अगर नाखुन बडे गये हो तो उन्को काट ले अगर बाल बडे गये हो तो उन्को ठीक कर वाले बगल के बाल बडे गये हो तो उन्को साफ कर ले नाफ के नीचे के बाल साफ कर ले फिर गुसल करे उस्के पास जो खूश्बू हो वो खूश्बू लगाये फिर साफ धुले हुवे कपडे जो अपने पास हो पहने उन्मे भी अगर सुफेद हो तो ज्यादा पसन्दीदा हे अगर अमामा इस्तेमाल करे तो उस्को भी पसन्दीदा करार दिया गया हे फिर मस्जीद के लिये रवाना हो जाये.

जुमा की तय्यारी और एहतेमाम जुमेरात से करनी चाहिये

इमाम गज़ाली(रह) ने लिखा हे के इस्लाम के शुरू दौर मे लौग जुमा की तय्यारी जुमेरात से शुरू कर देते थे इसलिये आदमी इस्तेग्फार का एहतेमाम करे अल्लाह का ज़िकर बडा दे दुआएं करे के कल जुमा का दिन आ रहा हे उसके तमाम हक को वसूल कर पाउं और कल जो कपडे पहने हे उन्को तय्यार करके अभी से रख दे ताके कल कपडों की तय्यारी मे वकत झाये न हो आज कल हमारा हाल तो ये हो गया हे के ऐन वकत पर इस्तरी लेकर कपडों को इस्तरी करने के लिये बेठेन्गे ये तो वकत झाये करना ही हूवा हालांके पहले से तय्यारी करनी चाहिये ताके जुमा के दिन की घडीयां झाये न होने पायें.

इमाम गज़ाली(रह) ने ये भी लिखा हे के अकाबिर फरमाते थे के जो आदमी जुमा की अगले रोज़ से तय्यारी करे ये उस्की सआदत की बात हे और बडा बदनसीब हे वो आदमी जो जुमा की सबह को ये पूछे के आज कौन सा दिन हे मतलब ये के उस्को ये भी पता नही के आज कौनसा दिन हे इसलिये पहले से आदमी को उस्की तय्यारी करनी चाहिये.

जुमा के लिये मस्जीद पहुंचने के पांच दरजे

हज़रत अबू हुरैरह(रदी) फरमाते हे के हुज़ूर صلى الله عليه وسلم ने इरशाद फरमाया जिस ने जुमा के दिन जनाबत की तरह गुसल किया यानी वाजिबात सुन्नते और मुस्तहब्बात की पूरी रियाअत के साथ मुकम्मल तरीका से गुसल किया फिर पहली घडी मे मस्जीद पहुंच गया तो गोया उसने उंट की कुरबानी की और जो दूसरी घडी मे पहुंचा गोया उसने गाय की कुरबानी की और जो तीसरी घडी मे पहुंचा गोया उसने सिंगदार मेन्ढे की कुरबानी की और जो चोथी घडी मे पहुंचा गोया उसने मुरगी की कुरबानी की और पांचवी घडी मे पहुंचा गोया उसने अल्लाह के रास्ते मे अंडा पेश किया फिर जब इमाम खुतबा देने के लिये आता हे तो फरिश्ते मस्जीद मे हाजिर हो जाते हे और खुतबा सुनने मे मश्गूल हो जाते हे. (मुत्तफकुन अलयहि/११५७)

इफादात- बाज़ोंने कहा के दूसरी हदीस मे 'मन इग्तसिल वगस्सल' के अल्फाज़ आते हे जिस्की वजह से ये बेहतर करार दिया गया हे के आदमी अगर अपनी बीवी से जुमा की रात मे सोहबत कर ले और फिर गुसल करे तो बहुत अच्छा हे ताके निगाहों की पाकीज़गी और तबीयत की

यकसूइ भी हासिल हो जाये.

इमाम गज़ाली(रह) ने लिखा हे के पहली घडी से मुराद सुब्हे सादिक के बाद का इब्तेदाइ वकत हे यानी सूब्हे सादिक होते ही गुसल करके तय्यार होकर जुमा की नमाज़ पढने के इरादे से मस्जीद पहुंच जाये तो उस्को उंट की कुरबानी करने का सवाब मिलता हे उतना सवाब मिलेगा और दूसरी घडी से मुराद सूरज तुलूअ होने के बाद मकरूह वकत खतम होने से पहले का वकत हे और तीसरी घडी से मुराद इशराक का वकत हे और चोथी और पांचवी घडी से मुराद चाश्त का वकत यानी दस गियारा बजे से ज़वाल से पहले पहले तक का वकत हे और जहां ज़वाल हो गया तो अब ये सिलसिल खतम हो गया.

इस्लाह के लाइक अमल

आज कल आम तौर हम लौगों का मिज़ाज ये बन गया हे के हम ज़वाल के बाद ही मस्जीद मे आते हे हालांके उस वकत तो ये सारी फज़ीलतें खतम हो जाती हे इसलिये उससे पहले आने का एहतेमाम करना चाहिये अखीर दरजे मे ज़वाल से कम से कम एक दो घंटा पहले तो मस्जीद मे आही जाये.

बाज़ रिवायतों मे ये भी हे के फरिश्ते रजिस्टर लेकर मस्जीद के दरवाज़े पर बेठते हे और आने वालों का नाम

दरज करते हे बाज़ रिवायतों मे ये आया हे के चांदी के अवराक और सोने के कलम होते हे उससे वो लिखते हे और जो आदमी हमेशा का जल्दी आने का आदी होता हे फिर किसी दिन वो नही आ पाता तो फरिश्ते आपस मे गुफतेगू करते हे के फला आदमी अब तक नही आया कया बात हे वो तो हमेशा जल्दी आता हे फिर फरिश्ते उस्के लिये दुआ करते हे के ए अल्लाह अगर उस्को कोयी बीमारी हो गयी हो तो अच्छा कर दे कुछ तकलीफ हो तो दूर कर दे किसी परेशानी मे मुब्तेला हो गया हो तो उस्की परेशानी को दूर कर दे अगर किसी गफलत मे पड गया हो तो उस्की गफलत को खतम कर दे ताके वो जल्दी से आ जाये जैसे जो आदमी दोस्तों की मेहफिल मे हमेशा पहुंचने का आदी हो और किसी दिन न आये तो सब केसी फिकर करते हे इसी तरह फरिश्तों का भी यही हाल होता हे के जो आदमी मस्जीद मे आने का आदी हो और किसी दिन अपने वकत पर नही पहुंच सका तो फरिश्ते आपस मे मुज़ाकरा करते हे और उस्के लिये दुआ करते हे के उस्की जो रूकावट हो वो अल्लाह दूर कर दे ताके वो जल्दी से मस्जीद मे आ जाये लेकिन जब ज़वाल हो जाता हे तो फरिश्ते अपने रजिस्टर बन्द करके मस्जीद मे आ जाते हे

उस्के बाद जो आता हे वो नमाज़ के हक की वजह से आता हे उस्को जुमा की फज़ीलत हासिल नही होती.

जुमा के दिन एक कबूलीयत की घडी

हज़रत अबू हुरैरह(रदी) फरमाते हे के हुज़ूरﷺने जुमा के दिन का तज़किरा किया और फरमाया उस दिन मे एक घडी ऐसी हे के कोयी मुसलमान जब उस्को पा लेता हे उस हाल मे के वो नमाज़ मे हो या अल्लाह से दुआ करता हो उस वकत वो अल्लाह से जो चीज़ भी मांगता हे अल्लाह उस्को वो अता कर देते हे और हुज़ूरﷺ ने हाथ के इशारा से फरमाया के वो वकत बहुत कम होता हे. (मुत्तफकुन अलयहि/११५८)

इफादात- मतलब ये के चंद सेकन्डों या कुछ मिनटो का वकत होता हे उस घडी मे जो मांगता हे वो कबूल होता हे वो घडी कौनसी हे? अल्लाह ने वो घडी जुमा के दिन मे रखी हे और उस सिलसिले मे बहुत सारी बातें कही गयी उलमा ने लिखा हे के जो आदमी ज़वाल से लेकर इमाम के खुतबा से फारिग होने तक और असर से लेकर मगरिब तक मशगूल रहेगा यकीनन उस्को वो घडी मिल जायेगी और फज़ीलत हासिल हो जायेगी इसलिये उस्का एहतेमाम करना चाहिये.

हमारे हज़रत शैख मौलाना मुहम्मद ज़करीय्या साहब(रह) को देखा के हज़रत उस्का बडा एहतेमाम फरमाते थे के ज़वाल से पहले मस्जीद पहुंच जाते थे और फिर किसी से भी बात चीत नही फरमाते थे उसी तरह् असर के बाद भी किसी से बात नही करते थे और मगरिब तक मुराकबा और दुआ वगैरा मे मश्गूल रेहते थे इसलिये आदमी अगर उन दो अवकात का एहतेमाम कर ले तो उम्मीद हे के इन्शाअल्लाह उस्को वो घडी हासिल हो जायेगी.

हज़रत अबू मुसा अशअरी(रदी) सहाबी हे उन्के साहब्ज़ादे हज़रत अबू बुरदा फरमाते हे के हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर(रदी) ने एक मरतबा उन से पूछा तुम ने अपने अब्बा को जुमा की घडी के सिलसिले मे हुज़ूर صلى الله عليه وسلم से कोयी रिवायत बयान फरमाते हुवे सुना उन्होने कहा जिहा मेने उन्को सुना हे वो फरमाते थे के मेने हुज़ूर صلى الله عليه وسلم को इरशाद फरमाते हुवे सुना के वो घडी इमाम के खुतबा के लिये बेठने से लेकर नमाज़ खतम होने तक हे जब इमाम खुतबा के लिये बेठ जाये तो ज़ुबान से दुआ नही कर सकते लेकिन दिल से आदमी दुआ कर सकता हे. (मुत्तफकुन अलयहि/११५९)
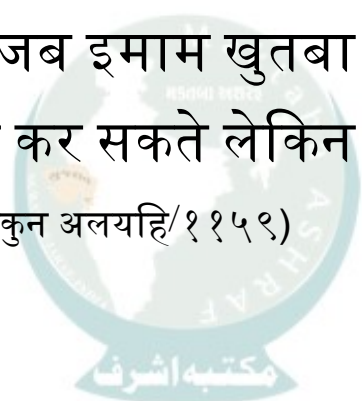
जुमा के दिन ज्यादा से ज्यादा दुरूद भेजा करो

हज़रत औस बिन औस(रदी) फरमाते हे के हुज़ूर ﷺ ने इरशाद फरमाया तुम्हारे दिनों मे सब से अफज़ल दिन जुमा का दिन हे उस दिन मुझ पर ज्यादा से ज्यादा दुरूद भेजा करो तुम्हारा दुरूद मुझ पर पैश किया जाता हे. (मुत्तफकुन अलयहि/११६०)

इफादात- जुमा के आदाब मे से ये भी हे के जुमा की रात और जुमा के दिन मे हुज़ूर ﷺ पर कसरत से दुरूद पढे वैसे जुमा के दिन असर की नमाज़ के बाद एक मख्सूस दुरूद की फज़ीलत आयी हे हज़रत अबू हुरैरह(रदी) की रिवायत हे के जुमा के दिन असर की नमाज़ के बाद अपनी जगाह पर बेठे बेठे अस्सी(८०) मरतबा अगर ये दुरूद शरीफ पढा जाये-

अल्लाहुम्मा सल्ली अला मुहम्मदीनीन नबीय्यील, उम्मीयी वअला आलिहि व सल्लीम तस्लीमा.

तो उसके अस्सी(८०) साल के गुनाह माफ होते हे और अस्सी(८०) साल की इबादत का सवाब लिखा जाता हे जुमा के दिन और भी दुरूदों की फज़ीलत आयी हे इसलिये उन दुरूदों के पढने का जुमा की रात मे जुमा के दिन मे

एहतेमाम किया जाये अकाबिर के यहां उस्का एहतेमाम होता था के जुमा की रात मे वो खुसूसीयत के साथ दुरूद पढा करते थे वैसे कोयी आदमी वज़ीफे या मामूल के तौर पर जुमा की रात मे कुछ मिकदार मुकर्रर कर ले तो ज्यादा पसन्दीदा हे हुज़ूरﷺ फरमाते हे के वो मैरे उपर पेश होता हे और हुज़ूरﷺ उस्की तरफ खुसूसी तवज्जुह फरमाते हे. बहरहाल आदमी को उस्का बहुत ही एहतेमाम करना चाहिये.

सूरे कहफ का भी एहतेमाम हो

जुमा के आदाब मे से ये भी हे के जुमा के दिन या जुमा की रात मे सूरे कहफ पढी जाये जुमा की रात मे भी पढ सकते हे अल्लामा शामी(रह) ने लिखा हे के जुमा के दिन असर से पहले पहले पढ ले इसलिये के असर पर फरिश्तों की डयूटी बदल जाती हे और अगले दिन वाले फरिश्ते आ जाते हे इसलिये इससे पहले सूरे कहफ आदमी पढ लेगा तो वो उस्के लिये नूर बन्ती हे.

हवाला- हदीस के इस्लाही मज़ामीन उर्दू से मजमून का लिप्यांतर किया गया हे.